











# सम्पादकीय

## खामोश हो गई आम आदमी के दिल को सुकून देने वाली आवाज

एक दौर था जब 'चिंडी आई है' जैसी गजल गाकर पंकज उथास ने बैश्यमार लोकप्रियता कमाई और वे उस दौर में रेडियो के माध्यम से हर घर में गूंजने वाली आवाज बन गए। पवाश्री पंकज उथास हिंदुस्तानी संगीत में गजल की ओर आवाज रहे, जिन्होंने गजल की जटिल परंपरा से बाहर निकाल कर उसे हर आदमी तक पहुंचाया। पंकज उथास ने न केवल गली-मोहल्लों, चौक-चौराहों, छोटी जगह के लोगों के दिलों को गजल के सुकून से दे रहे हैं। कौसे शुरू हुआ म्यूजिकल करियर? पंकज उथास के संगीत के सफर की शुरूआत 6 साल की उम्र से ही हो गई थी। उनके घर शुरू से ही संगीत का माहौल था, पंकज उथास को संगीत विरासत में मिला था। यही वजह है कि संगीत की दुनिया में कदम रखने के बाद वह हमेशा के लिए उसी के होकर रह गए। उन्हें संगीत का पहला एक्सपोजर स्कूल में प्रार्थना करने से मिला और ये सफर इतना आगे बढ़ता चला गया कि आज उनके निधन



आदमी के दुख-दर्द को पहचानने वाली आवाज भी बने। एक दौर था जब 'चिंटी आई हैं' जैसी गजल गाकर पंकज उथास ने बेशुमार लोकप्रियता कमाई और वे उस दौर में रेडियो के माध्यम से हर घर में गूंजने वाली आवाज बन गए। पंकज उथास देश-परदेस में रहने वाले और अपने देश को छोड़कर काम काज करने वाले व्यक्ति के दर्द की आवाज थी। आज पंकज उथास हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन उनकी आवाज हमेशा हमारे दिलों पर राज करती रहेगी। लेंडरी सिंगर पंकज उथास ने 72 साल की उम्र में अंतिम सांस ली। इस बात की खबर पंकज की बेटी नायाब उथास ने एक पोस्ट के जरिए साझा की है, जिसमें उन्होंने लिखा- 'बहुत दूख के साथ हमें बताना पड़ रहा है कि पद्मश्री पंकज उथास का 26 फरवरी 2024 को निधन हो गया है। वह लंबे समय से बीमार थे और उम्र संबंधी बीमारियों का सामना कर रहे थे।' इस खबर के बाद संगीत जगत में शोक की लहर छा गई है। पंकज जैसे गायक का इस तरह दुनिया छोड़कर चले जाना उनके फैस को गमगीन कर गया है। सोशल मीडिया पर लोग नम आंखों के को दिल से लगाकर रखे हुए हैं। पंकज उथास का पहला ऐल्बम 'आहट' 1980 में आया था, जिसमें उन्होंने कई गजलें गाई थीं। वहीं आम आदमी के दिलों में बसने वाले उनके कुछ मशहूर गानों की बात करें तो जिएं तो जिएं कैसे बिन आपके... ', 'चांदी जैसा रग है तेरा, 'चिंटी आई है...', ना कजरे की थार, ना मोतियों के हार...', सोने जैसे बाल...', जैसे कई गाने शामिल हैं। भावना की डोर-गजल संगीत का वो जोनर है जो हर दिल को कहीं न कहीं छेड़ने की ताकत रखता है। ऐसे में इसकी गायकी करना लोगों के दिलों को छेड़ने से कम नहीं माना जाता है। इसे यूं कहा जसकता है कि गजल गाने वाले गायकों के हाथ में लोगों की भावनाओं की एक डोर होती है। यदि इसे कम या ज्यादा छेड़ दिया जाए तो काम खराब हो सकता है, इसलिए गजल गायकों के कंधों पर एक बड़ी जिम्मेदारी होती है, जिसे पंकज उथास ने बखूबी निभाया है। पंकज उथास के गानों में दर्द और जुदाई की टीस ने लोगों की आत्मा को छू लिया। ऐसा भी कहा जा सकता है कि उनकी रुमानी आवाज उनके

साथ पंकज उथास को श्रद्धांजलि निजी जीवन को देन थी।

**धिलीवरी बॉय ने डांस के समय जोभैटो टी-शर्ट भी पहनी हुई है। शाहिद कपूर और कृति सेनन की फिल्म 'तेरी बातों में' एसा उलझा था कि वे जो भैंस की तरह चल रहे थे, वे जो भैंस की तरह चल रहे थे।**



बॉय डांस कर रहा है। सोशल मीडिया पर हर तरह के वीडियो वायरल होते रहते हैं। इनमें कई वीडियो लोगों के लिए हैरान करने वाले होते हैं, तो कुछ हँसाने वाले होते हैं। अब यह वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। बॉय डांस के वीडियो खूब देखने को मिलते हैं। अब एक ऐसा ही वीडियो फिर सामने आया है और इस पर लोग अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। यह वायरल वीडियो एक डिलीवरी बॉय का है। दरअसल, वह डिलीवरी के दौरान बीच सड़क पर डांस कर रहा है। अब यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। वीडियो में आप देख सकते हैं कि जिया' के टाइटल ट्रैक पर डिलीवरी बॉय डांस कर रहा है। जो एटो डिलीवरी बॉय एक परफेक्ट डांसर की तरह डांस कर रहा है। डिलीवरी बॉय के मस्त होकर डांस कर रहा है। अब यह वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो को इंस्टाग्राम पर नाम के अकाउंट से पोस्ट किया गया है। अब इसे लाखों लोग देख चुके हैं, जबकि पांच लाख करीब लोगों ने इसे लाइक किया है। इस वीडियो पर लोग जमकर प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा है, अरे पर मेरे चिठ्ठी पोटेटो का क्या हुआ? दूसरे यूजर का कहना है कि अब समझ आया ऑर्डर देने वाले भी आएंगे।

**बीते दशक में बैंकिंग और आर्थिक क्षेत्र में कई सुधार; बदलते चेहरे के साथ तेज विकास की संभावना**

मोदी सरकार ने सत्ता में आने के मामूली सरकार करनी पड़ी। इसके जवाब में कांग्रेस ने लैंबे ऐपर पेश किया, जिसमें मोदी सरकार की नाकामियों अभी 37.3 खरब डॉलर की है, जबकि आजादी के समय भारत की जीडीपी 227 अरब डॉलर की पीएम-स्वनिधि योजना, अटल पैशन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, भारतीय दिग्वाला और शोधन के संभावना है, जबकि वित्त वर्ष 2024 में जीडीपी के 7.3 प्रतिशत की दर से आगे सरकार द्वारा किए गए हालिय संरचनात्मक सुधारों की वजह से सरकार के इस दावे की पुष्टि की जा रही है।

मरावदी करना पड़ा। इसके जवाब में कांग्रेस ने ब्लैक पेपर पेश किया, जिसमें मोदी सरकार की नाकामियों

पाएम-स्थानाध योजना, अंतर्राष्ट्रीय योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, भारतीय दिवाला और शोधन

के चार प्रतिशत रहने का समावयन है, जबकि वित्त वर्ष 2024 में जीडीपी के 7.3 प्रतिशत की दर से आगे



**छवियों से ही प्रतीक बनते हैं; चुनाव में राजनेताओं और जन-मन पर दिखेगा दिलचस्प असर**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अनेक छवियां एक में सम्मिलित होकर प्रतीक में बदल कर अपना प्रभाव सुजित करती हैं। राहुल गांधी की कई छवियां या तो अभी विकास की प्रक्रिया में हैं या जो विकसित हैं, उनका अभी संघनित सम्मिलन नहीं हो पाया है। भारत में छवियों के अध्ययन का अभी तक कोई सुसंगत शास्त्र विकसित नहीं हो पाया है। इसके लिए शोध प्रविधि एवं इसके प्रभावों के अध्ययन, और अंकन एवं मापन का काम सुसंगत

वर्षों से राजनीतिक नेताओं की छवियों का राजनीतिक एवं चुनावी गोलबंदी पर पड़ने वाले परिणामों के अध्ययन, चर्चा एवं तिमश में शामिल रहा हूँ। मैं राजनीतिक नेताओं की छवियों के बनने, बिगड़ने, उनमें आने वाले ठहराव एवं गतिकी को समझने की कोशिश करता रहता हूँ। पिछले दिनों हमने उत्तर प्रदेश के छोटे शहरों, जिलों एवं कस्बों के 20 से 30 वर्ष के युवाओं के साथ संवाद किया। ये युवा समाज की विभिन्न जातियों एवं वर्गों से थे।

साफ लगीं। एक तो, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जन छवियों में रामजन्मभूमि प्राण-प्रतिष्ठा के बाद बड़ा उछल आया है। उन्हें लोग 'युग पुरुष' के रूप में देखने एवं कहने लगे हैं। उनकी 'युग पुरुष' की छवि सामान्य युवाओं के मन में रामजन्मभूमि प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के बाद की उत्पत्ति इसलिए मानी जानी चाहिए कि उसके पहले ऐसा सुनने को नहीं मिलता था। दूसरा, उनकी छवि आज 'राजनीति से परे' (बियोंड पॉलिटिक्स) अपने में सामाजिक,

नहीं हो पाया है। उनकी विद्यमान छवियों एवं युवाओं के एक वर्ग में-उनसे की जाने वाली अपेक्षाओं में अंतरिक्षरथ देखने को मिलता है। कई युवा उनके 'एंग्री यंग मैन' की छवि से सहमत नहीं दिखे। उन्हें अपेक्षा है कि उनकी छवि राजीव गांधी जैसी सौम्यता वाली हो। मनमोहन सिंह की सरकार के वक्त बिल फाइने की घटना का जिक्र करते कई युवा मिले। उनकी छवि निर्माण के सलाहकार शायद यह सोचते हों कि भारतीय युवाओं को

था अपने हस्त का इतिहास  
चिढ़ी आई है... गजल से  
रातोंरात देश-दुनिया में प्रसिद्धी  
के शिखर पर पहुंचे पंकज उथास  
आज भले हमारे बीच में नहीं हैं,  
लेकिन उनकी रुमानी आवाज  
सदैव संगीत प्रेमियों के कानों में  
गूंजती रहेगी। पंकज उथास ने  
पांच दशक तक संगीत प्रेमियों  
के दिलों पर राज किया। चिढ़ी  
आई है... गजल से रातों-रात  
देश-दुनिया में प्रसिद्धी के शिखर  
पर पहुंचे पंकज उथास आज भी



दंग से अभी होना बाकी है। 'छवियां' मात्र छवियां नहीं होती हैं, वे धीरे-धीरे प्रतीकों में रूपांतरित हो हमारे मानस को गहरे प्रभावित करती हैं। इसी प्रक्रिया में वे जन-मन की 'गोलबंदी' का स्वरूप रचती हैं। भारतीय राजनीति एवं चुनावों के अध्ययन में 'वृत्तांतों' पर बातें तो होती हैं, पर छवियों पर व्यापक चर्चा नहीं होती। लोगों के बयानों के आधार पर 'सेफोलॉजी' चुनावी परिणामों की व्याख्या तो करती रहती है, परंतु इस प्रक्रिया में छवियों के पड़ने वाले प्रभावों का न तो राजनीति-वैज्ञानिक अध्ययन करते हीं, न चुनाव विश्लेषक ज्यादा विचार करते हैं। जबकि मेरा मानना है कि राजनीति में छवियां धीरे-धीरे बनती-बिंगड़ती हमारी राजनीतिक कल्पनाशीलता (पॉलिटिकल इमैजिनेशन) को प्रभावित करती हैं। इसी प्रभाव निर्माण की प्रक्रिया में वे किसी नेता, किसी राजनीतिक दल एवं किसी विचार के प्रति मतदाताओं को प्रभावित करती रहती हैं। कई बार छवियां विश्वास या अविश्वास का सृजन कर हमें चुनावी बूथों तक ले जाती हैं। वे हममें मोहर रखती हैं एवं अनेक बार मोहर्भंग की घटियां करती हैं जैसे ऐसे विचारों के द्वारा देखा जाता है।

इनमें छात्र, छात्राएं, युवक युवतियां, दोनों ही कोटि से जुलागा थे। इनके साथ हुए संवादों से जो कुछ निहितार्थ निकले, वे बहुरोचक एवं समकालीन राजनीति का समझने में सहायक हो सकते हैं। इन संवादों से यह समझ में आये कि नेताओं की छवियां मंथर गरिब से बढ़ती या घटती हैं। इनमें अचानक उछल या गिरावट उन्वेद्धारा किए गए बड़े कार्यों या घटनाओं से आती है। मैंने इन संवादों के केंद्र में मूलतः दो छवियों-भारत वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं विष्णु वेनेता राहुल गांधी को रखा था। प्रधानमंत्री मोदी की छवियों वे वृत्तांतों में उन्हें प्रायः ईमानदार लोभ-लालच एवं परिवारगद से मुत्तु एवं विकास के लिए समर्पित नेता बताने की प्रवृत्ति दिखी। कई युवक उन्हें देश एवं धर्म के प्रति समर्पित नेता मान रहे थे। यह जानना सबसे रोचक था कि उनमें से कई युवक उन्हें 'युग पुरुष' के रूप में भी देख लो रहे हैं। उनका कहना था कि एक ऐसे नेता हैं, जो एक पूरे युवा को रचने एवं प्रभावित करने वाला काम कर रहे हैं। इन युवाओं के मन में उनकी छवियों के जै वृत्तांतों का दृश्य रखने के लिए उन्हें जो विचारों के द्वारा देखा जाता है।

धार्मिक एवं परिवारपन से जुड़ी छवियां शामिल किए हुए हैं। किसी भी राजनेता की जनछवियों में सकारात्मक एवं नकारात्मक, दोनों ही प्रकार की धारणाएँ होती हैं। लेकिन जनता के बयानों में छवियों के संदर्भ में प्रायः सकारात्मक वृत्तांत ज्यादा मिलते हैं। दूसरे, कई बार लोगों में उनके बारे में उदासीनता मिलती है। तीसरे स्तर पर आता है, छवियों की नकारात्मकता का बयान, जिसकी मात्रा या प्रतिशत प्रायः कम ही होता है। राष्ट्रीय नेताओं में 'अन्य छवि' जनता के मन में जिस नेता की बनती-बिगड़ती रहती है-वह ही कंग्रेस के राहुल गांधी। राहुल गांधी अपने अनक प्रतिरोधी राजनीतिक प्रयासों से अपनी छवि विकसित करते रहते हैं। उनकी छवियां अभी विकसित होने के क्रम में हैं। वे छवियां अभी प्रतीक में नहीं बदल पाई हैं, जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी की छवियों के साथ हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अनक छवियां एक में सम्प्लित होकर प्रतीक में बदल कर अपना प्रभाव सूजित करती हैं। राहुल गांधी की कई छवियां या तो अभी विकास की प्रक्रिया में हैं या जो विकसित हैं, उनमें से कुछ अन्यथा अस्तित्व

महान गायक किशोर कुमार के साथ वर्ष 1970 में आई फिल्म 'तुम हसीन, मैं जवान' के लिए 'मुँगी की अम्मा यह तो बता' गाया था। पंकज उथास को संगीत विरासत में मिला था। वैसे तो उनके दादा एक जर्मीनार और भावनगर के दीवान थे, लेकिन पिता को वाघयंत्र इसराज बजाने और मां को गाने का शौक था। केवल पंकज उथास ही नहीं, उनके दोनों बड़े भाई मनहर उथास और निर्जल उथास भी संगीत के क्षेत्र में हैं। अनोखा रहा संगीत का सफर पंकज उथास की संगीत के प्रति रुचि को देखते हुए उन्हें राजकोट की एक संगीत एकेडमी में दाखिला दिलाया गया था। उन्होंने एकेडमी से संगीत कीशिका लेने के बाद कई स्टेज शो किए, लेकिन उन्हें ज्यादा प्रसिद्धी गजल गायकी से ही मिली। उनकी पहली गजल एल्बम 'आहत' वर्ष 1980 में रिलीज हुई थी, जिसने लोगों को उनकी गायकी की ओर आकर्षित किया, लेकिन उन्हें असली प्रसिद्धी महेश भट्ट की फिल्म 'नाम', जो 1986 में आई थी, की गजल चिह्नी आई है, से मिली। यह उनके करियर में एक चर्चा सोने था। पंकज उथास ने



## लापता लेडीज' की कास्टिंग नहीं थी आसान बजट को लेकर आमीर खान रहते हैं सख्त

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। मिस्टर परफेक्शनिस्ट'

कह जाने वाले आमीर खान जब

भी किसी फिल्म की अनाउंसमेंट

करते हैं, तो उसका क्रेज लोगों में

रिलीज तक बना रहता है। स्टोरी

को इंटर्स्टिंग तरीके से दिखाने और

बताने का उक्ता तरीका ही ऐसा है

कि वह लोगों के दिलों को छु जाती

है। 'लाल सिंह चड्हा' के बॉक्स

ऑफिस फेलियर के बाद आमीर ने

एक्टिंग से दूरी बना लेने की घोषणा

की थी। वहीं, अब डेढ़ साल बाद

वह बौद्धिक प्रोडक्शन 'लापता लेडीज'

से वापसी कर रहे हैं। किरण राव

लापता लेडीज से डायरेक्शन के क्षेत्र

में वापसी कर रही है। इस फिल्म

के निर्माताओं में उनके एक्स हस्पॉड

आमीर खान शामिल

हैं। फिल्म से ज्यादा दूर नहीं है। ऐसे

में मैक्सी ने इसका प्रोशन शुरू

कर दिया है। किरण राव ने हाल

ही में खुलासा किया कि मूरी की

एंटरटेनमेंट के लिए नहीं लिखी

ही में रिलीज हो जाएगी।

इसी के साथ उन्होंने कई अन्य

खुलासे भी किए। फिल्म के

डायरेक्शन की कमान किरण राव

ने संभाली है। फिल्म 'धोबी घाट'

के बाद किरण ने निर्देशन से दूरी

बना ली थी। हालांकि, वह फिल्मों

में अब भी जैसे लोगों में

रिलीज तक बना रहता है। स्टोरी

को इंटर्स्टिंग तरीके से दिखाने और

बताने का उक्ता तरीका ही ऐसा है

कि वह लोगों के दिलों को छु जाती

है। 'लाल सिंह चड्हा' के बॉक्स

ऑफिस फेलियर के बाद आमीर ने

एक्टिंग से दूरी बना लेने की घोषणा

की थी। वहीं, अब डेढ़ साल बाद

वह बौद्धिक प्रोडक्शन 'लापता लेडीज'

से वापसी कर रहे हैं।

किरण राव ने लापता लेडीज से डायरेक्शन के क्षेत्र

में वापसी कर रही है। इस फिल्म

के निर्माताओं में उनके एक्स हस्पॉड

आमीर खान शामिल

हैं। फिल्म से ज्यादा दूर नहीं है। ऐसे

में मैक्सी ने इसका प्रोशन शुरू

कर दिया है। किरण राव ने हाल

ही में खुलासा किया कि मूरी की

एंटरटेनमेंट के लिए नहीं लिखी

ही में रिलीज हो जाएगी।

इसी के साथ उन्होंने कई अन्य

खुलासे भी किए। फिल्म के

को ड्रेड्यूस जरूर कर रही थी।

अब करीब 13 साल बाद उन्होंने

निर्देशन के क्षेत्र में वापसी की है।

फिल्म की कास्टिंग से लेकर

कहानी तक, 'लापता लेडीज' को

सिर्फ औरतों की ही नहीं नहीं

सांस्कृतिक रूप से अलग लोगों

की कहानी भी हमें पाख़ी करनी

चाहिए। 'लापता लेडीज' में जामताडा- सबका नंबर आएगा वेब

सीरीज फेम स्पर्श श्रीवास्तव, टीवी

कलाकार नीताशी गोयल और

प्रतिभा राणा लोडी में

हैं। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना

खान का नया गाना हल्की हल्की

है। जिसका नाम है 'हल्की हल्की

सी' मुनव्वर फारूकी और हिना